भगवद् गीता का ज्ञान – (16)

" आत्मा को शरीर में कौन और कैसे बांधता है? "

श्रीमद् भगवद् गीता के 14वें अध्याय के पाँचवें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं –

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥१४:५॥

अर्थात - " हे बलिष्ठ भुजाओं वाले अर्जुन ! भौतिक प्रकृति से उत्पन्न सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण -- ये तीन प्रकार के गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बान्धते हैं।" **(गीता – 14:5)**

व्याख्या -- आत्मा तो दिव्य और अविनाशी है, परन्तु प्रकृति-जनित ये तीन गुण उसे शरीर में अलग-अलग प्रकार से बाँध देते हैं। मनुष्य इन गुणों के जादू के वशीभूत होकर कार्य करता रहता है और मुक्ति के लिए प्रयास नहीं करता।

अगले तीन श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण क्रमशः सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण का वर्णन करते हुए बताते हैं कि आत्मा का शरीर में बंधन किस प्रकार इन गुणों से प्रभावित होता है --

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् । सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥१४:६॥

अर्थात - " हे निष्पाप अर्जुन ! उन तीन गुणों में सत्त्वगुण निर्मल होने के कारण ज्ञान का प्रकाश करने वाला और विकार-रहित है। वह जीवात्मा को शरीर में सुख और ज्ञान के भावों से बांधता है।" **(गीता – 14:6)**

व्याख्या - जो लोग सत्त्वगुण में स्थित होते हैं, वे सुख में तथा ज्ञान के अहंकार में पड़े रह जाते हैं और इस कारण मुक्ति के लिए प्रयास ही नहीं करते।

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥१४:७॥

अर्थात - " हे कुन्ती-पुत्र अर्जुन ! रागात्मक रजोगुण को तुम तृष्णा और आसक्ति से उत्पन्न जानो। वह इस जीवात्मा को कर्मों और उनके फल के सम्बन्ध से शरीर में बांधता है। " **(गीता – 14:7)**

व्याख्या - जो लोग रजोगुण में स्थित होते हैं, वे आसक्ति-वश एवं प्रतिष्ठा हेतु कार्य-रत रहते हैं और मुक्ति के लिए कोई प्रयास नहीं करते। वर्तमान काल में सारा संसार ही कम या अधिक रूप से रजोगुणी है।

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥१४:८॥

अर्थात - "हे भरत-वंशी अर्जुन ! सब देह-अभिमानियों को मोहित करने वाले तमोगुण को तुम अज्ञान से उत्पन्न जानो। वह इस जीवात्मा को प्रमाद, आलस्य और निद्रा के द्वारा शरीर में बांधता है।" (गीता – 14:8)

व्याख्या - जो लोग तमोगुण में स्थित होते हैं, वे प्रमाद, आलस्य और निद्रा के वश में होने के कारण मुक्ति के लिए कोई प्रयास नहीं कर पाते।